

ध्वनि प्रदूषण: गंभीर संकट से सुरक्षा पर चिंतन

समावेशी विकास के लिए सकारात्मक वैज्ञानिक दृष्टिकोण: आवाजें जो चुपचाप हमें खामोश कर रही हैं

By **पूनम राँतेला**

मानव अपनी उत्पत्ति से लेकर आज तक विकास का एक लंबा सफर तय कर चुका है। इस सफर में अपनी बुद्धिमत्ता से मानव ने जीवन के हर पक्ष को पहले से कहीं ज्यादा उन्नत और बेहतर बनाने की कोशिश की है। विज्ञान और तकनीक के शीर्ष पर विराजमान हमारी मौजूदा पीढ़ी एक ऐसे दौर से गुजर रही है जहां समय के साथ प्रतिस्पर्धा करना और पीछे मुड़कर देखने की कोशिश भी ना करना आदत बनती जा रही है, और यही आदत ऐसी गंभीर समस्याओं को जन्म देती है जिसके दुष्परिणाम सिर्फ मानव जाति को ही नहीं बल्कि पूरे जीव जगत और पर्यावरण को भुगतने पड़ते हैं।

ऐसी ही एक गंभीर समस्या है "शोर" जिसे विज्ञान की भाषा में "ध्वनि प्रदूषण" कहा जाता है। हमारी गतिविधियों में अनचाही आवाजों से बना यह शोर स्थाई हो गया है। सड़क यातायात, हवाई अड्डे, रेलवे स्टेशन, कल-कारखाने, विवाह समारोह, सार्वजनिक सभाएं, चुनाव प्रचार... इन सब की आवाजें हमारी रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन गई हैं और गंभीर बात ये है कि धीरे-धीरे खामोशी से यह शोर हमारी जिंदगियों को खामोश करता जा रहा है।

हममें से ज्यादातर लोग रोज समाचारों, अखबारों और टीवी पर देखते-सुनते हैं कि कुछ मौतें अचानक हो रही हैं। इनमें से काफी ऐसी हैं जो किसी समारोह, डांस-फ्लोर, मंच या गेट-टूगेदर में आनंद के क्षण बिता रहे लोगों के अचानक गिर जाने से हो रही हैं। उनके आसपास आपको वो खलनायक जरूर दिखेगा जो आज शोर का पर्याय बन चुका है..... "डीजे" या बहुत सारे बड़े स्पीकर वाला म्यूजिक बैंड।

कहने को यह उपकरण खुशी के अवसरों पर गीतों और नृत्यों की हमारी भारतीय परंपराओं को बनाये रखने के लिए संगीत उपलब्ध कराता है, पर वास्तविकता यह है कि इस भयानक ध्वनि स्रोत ने आनंदमय संगीत के मायने ही बदल दिए हैं। इन आवाजों को एक सीमा तक सहा भी जा सकता है, लेकिन आवाजों के साथ जो कम्पन पैदा होता है उसे किसी भी सूरत में सहन करना नामुमकिन है।

यही कम्पन अब वैश्विक चुनौती बन गया है, क्योंकि लगातार जारी विभिन्न देशों के मध्य युद्धों में इस्तेमाल किये जाने वाली अत्याधुनिक मिसाइल, ड्रोन और एयर स्ट्राइक के विभिन्न हथियारों से उत्पन्न ध्वनि लगातार बड़े पैमाने पर मानवीय अस्तित्व के लिए संकट खड़ा कर रही है।

इस कम्पन की आवृत्ति हमारे हृदय की धड़कन को सीधा प्रभावित करती है, रक्तचाप को उच्चतम स्तर तक पहुंचा देती है और हृदयाघात की संभावना को ९०% तक बढ़ा देती है। कुछ स्थितियों में यह संभावना १००% तक पहुँच जाती है और ऐसी जिंदगियाँ हमेशा के लिए खामोश हो जाती हैं।

कुछ समय पहले उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले में डीजे के असहनीय शोर से १४० मुर्गियों का हृदयाघात से मर जाना हमारी आंखें खोल देने के लिए काफी है। बहुत तेज आवाज जानवर और पक्षियों में तीव्र तनाव पैदा कर उनकी हृदय गति को रोक सकती है, उनकी प्रजनन क्षमता तक को प्रभावित करती है और यही मानव के लिए भी सत्य है।

वैज्ञानिक शोध और चिंताएं

विभिन्न वैज्ञानिकों ने बड़ी जनसंख्या पर शोध और विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी किये गए आंकड़ों के आधार पर ध्वनि प्रदूषण को बेहद गंभीर खतरा बताया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन सामान्य मनुष्य के लिए ६० डेसीबल तक की ध्वनि को हानि रहित मानता है। वैज्ञानिकों ने एक बड़ी जनसंख्या पर शोध के बाद दैनिक जीवन में शोर की तीव्रता के आंकड़े जारी किये हैं:

शोर का स्रोत	तीव्रता
यातायात	७०-१०० डेसीबल
वायु यातायात	५०-१३० डेसीबल
निर्माण कार्य	८०-११५ डेसीबल
रात्रि गतिविधियां (बार, पार्टी)	१०० डेसीबल
कृषि कार्य	९०-९८ डेसीबल
घरेलू कार्य	२०-११० डेसीबल

स्पष्ट है, जीवन में रोजमर्रा की गतिविधियां ६० डेसीबल के ऊपर की तीव्रता तक पहुँचती हैं, और यदि लंबे समय तक शोर के संपर्क में रहा जाए तो गंभीर स्वास्थ्य संकट उत्पन्न होते हैं।

एक और चौंकाने वाला तथ्य यह है कि शोर के साथ यदि वायु प्रदूषण मिल जाए तो स्थिति इतनी गंभीर हो जाती है कि ब्रेन स्ट्रोक का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। हवा में मौजूद महीन कण और सामान्य ध्वनि मिलकर इस खतरे को ११% तक बढ़ा देते हैं और अगर ध्वनि शोर की तीव्रता पकड़ ले तो यह खतरा कई गुना बढ़ जाता है।

दुनिया के १०० सबसे प्रदूषित शहरों में से ७४ भारत में हैं। इसलिए शोर सचमुच भारत में गंभीर खतरा बनता जा रहा है। एक शोध के अनुसार वर्ष २०५० तक पूरे विश्व में लगभग २.५ करोड़ लोग शोर के कारण सुनने की क्षमता खो चुके होंगे, ऐसा अनुमान व्यक्त किया गया है।

विज्ञान कहता है कि ७० से ९० डेसीबल आवृत्ति वाली ध्वनि के बीच लगातार रहने वाला व्यक्ति बहरेपन की तरफ जा रहा होता है।

शोर के दुष्परिणाम

- १) शारीरिक: श्वसन समस्याएं, उच्च रक्तचाप और धड़कन, सर दर्द, गैस, हृदयाघात
- २) मनोवैज्ञानिक: चिंता, अवसाद, एंग्जायटी, हिस्टीरिया, थकान (जानवरों में भी)
- ३) अनिद्रा: ३० डेसीबल से अधिक शोर नींद नहीं आने देता और फिर अनिद्रा की बीमारी हो जाती है।
- ४) व्यवहार: गुस्सा, चिड़चिड़ापन, आक्रामक व्यवहार
- ५) संज्ञानात्मक: याददाश्त कमजोर होना, एकाग्रता की कमी

इसके अलावा यदि गर्भवती महिलाएं ४ महीने तक ७० से ९० डेसीबल की ध्वनि में लगातार रहें तो बच्चा बहरा भी पैदा हो सकता है।

यह तो ९० डेसीबल तक की ध्वनि का दुष्प्रभाव है। क्या आप जानना चाहेंगे कि डीजे जो आवाज पैदा करता है, उसकी आवृत्ति कितनी होती है? १२० से २०० डेसीबल..... हमारी सहनशक्ति से बहुत बाहर और इसीलिए १०० फीसदी घातक।

समावेशी विकास – हमारी जिम्मेदारी

समावेशी विकास की वैज्ञानिक अवधारणा कहती है कि हमें तकनीकी उन्नति के साथ उन स्रोतों को सीमा में बाँधने का प्रयास अवश्य करना चाहिए जो मानवीय जीवन के लिए खतरा पैदा करें।

इसलिए इन आवाजों को सीमाओं में बांधना हमारी ही जिम्मेदारी है। जो आवाजें हमारी जिंदगियां निगल रही हैं, उनका खामोश होना जरूरी है। डीजे पर पूर्ण प्रतिबंध और ध्वनि विस्तारक यंत्रों की आवाजों को सीमा में बांधना ये जरूरी अभियान हमें खुद चलाने होंगे क्योंकि इसके लिए अगर हम प्रशासन या सरकार के आदेशों का इंतजार करेंगे तो इनकी आवृत्ति हमें उन तक शिकायत तक पहुँचाने का मौका नहीं देगी।

इसके अलावा अपनी रोज़मर्रा की जिन्दगी में शोर को सीमित करना बिल्कुल और पूरी तरह हम पर निर्भर है। मोहल्ले में होने वाले कीर्तन, प्रार्थना और अन्य धार्मिक आयोजन इससे मुक्त रखे जा सकते हैं। हर आयोजन में माईक या ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग आवश्यक नहीं है, क्योंकि उनका होना जिंदगी के लिए घातक है।

यकीन मानिए.... इस डिजिटल युग में यह भयानक गूँज अब बेहद खतरनाक और जानलेवा हो गई है। आइए संकल्प लें कि जहां भी ऐसी आवाजें आपको परेशान करें, आपकी सहनशक्ति को आजमाएं; वहां एकजुट होकर उन्हें तुरंत खामोश करने के लिए तैयार हो जाएं ताकि जिंदगियाँ खामोश होने से बची रहें।

पूनम रौतेला

प्रधानाचार्य, सोशल एक्टिविस्ट, झालावाड़